साझा B-सीरीज़ : 1000 बहुविकल्पीय प्रश्न

तीनों परीक्षाओं के साझा पाठ्यक्रम (हिन्दी भाषा, काव्यशास्त्र-काव्यांग, हिन्दी साहित्य का इतिहास तथा साझा निर्धारित कृतियाँ) पर आधारित प्रश्न। विषयवार क्रम; प्रत्येक खंड के अंत में उत्तरमाला एवं व्याख्या।

विषय-सूची

- **हिन्दी भाषा :** प्रश्न 1–59
- **काव्यशास्त्र एवं काव्यांग :** प्रश्न 60–154
- **हिन्दी साहित्य का इतिहास :** प्रश्न 155–621
- **निर्धारित पाठ / कृतियाँ :** प्रश्न 622–1000

हिन्दी भाषा

प्रश्न-संख्या: 59 (क्रमांक 1–59)

1. विकास-शृंखला की दृष्टि से शुद्ध क्रम चुनिए —
(A) कर्म > काम > कम्म (B) कर्म > कम्म > काम (C) कम्म > कर्म > काम (D) काम > कम्म > कर्म

2. 'रत्न > रतन' और 'दन्त > दांत' में क्रमशः प्रक्रियाएं हैं —
(A) स्वर-भक्ति; अनुनासिकीकरण (पूर्व-स्वर दीर्घ सहित)
(B) समीकरण; स्वर-भक्ति
(C) वर्ण-विपर्यय; समीकरण
(D) स्वरागम; ऊष्म-एकीकरण

3. गार्सां द तासी की प्रसिद्धि का आधार है —
(A) प्रथम हिन्दी व्याकरण
(B) हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास-ग्रंथ (फ्रांसीसी, 1839)
(C) ब्राह्मी का उद्घाचन
(D) LSI सर्वेक्षण

4. "भल्ला हुआ जु मारिआ" जैसी पंक्तियों की भाषिक अवस्था है —
(A) शौरसेनी प्राकृत (B) अपभ्रंश (वीरगाथा-स्वर) (C) मानक ब्रज (D) दक्खिनी

5. हिन्दी के उद्भव-काल विषयक असंगत युग्म है —
(A) राहुल सांकृत्यायन — 8वीं शती
(B) चटर्जी — 10वीं शती
(C) शुक्ल — संवत् 1050 से आदिकाल
(D) ग्रियर्सन — 14वीं शती

6. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए —
(i) पालि मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा की प्रथम अवस्था है।
(ii) अर्धमागधी प्राकृत में श्वेतांबर जैन आगम साहित्य रचित है।
(iii) महाराष्ट्री प्राकृत संस्कृत नाटकों में निम्न पात्रों के संवाद की भाषा थी।
(iv) पैशाची को 'भूत-भाषा' कहा जाता है।
(A) i, ii और iv सही (B) i, ii और iii सही (C) ii, iii और iv सही (D) सभी सही

7. कथन (A) : अपभ्रंश को आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की जननी कहा जाता है।
कारण (R) : समस्त आधुनिक आर्य भाषाएं अपभ्रंश के क्षेत्रीय भेदों से ही विकसित हुई हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या है
(B) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या नहीं है
(C) A सही है, R गलत है
(D) A गलत है, R सही है

8. सुमेलित कीजिए —
सूची-I (अपभ्रंश) : (a) मागधी (b) ब्राचड (c) महाराष्ट्री (d) अर्धमागधी
सूची-II (विकसित भाषा) : (1) सिंधी (2) मराठी (3) अवधी (4) भोजपुरी
(A) a-4, b-1, c-2, d-3
(B) a-3, b-1, c-2, d-4
(C) a-4, b-2, c-1, d-3
(D) a-1, b-4, c-2, d-3

9. 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' — उक्ति किस कवि की है और उसने अपनी भाषा को क्या कहा है?
(A) अब्दुर रहमान — पुरानी हिन्दी
(B) विद्यापति — अवहट्ठ
(C) चंदबरदाई — पिंगल
(D) सरहपा — संधा भाषा

10. भारोपीय परिवार के संदर्भ में कौन-सा कथन असत्य है?
(A) संस्कृत शतम् वर्ग की भाषा है
(B) तोखारी पूर्व में बोली जाकर भी केन्तुम वर्ग की है

(C) हित्ती प्राचीनतम अभिलिखित भारोपीय भाषा मानी जाती है
(D) केन्तुम-शतम् विभाजन का आधार रूप-रचना है

11. कालक्रमानुसार सही अनुक्रम चुनिए —
(A) पालि → प्राकृत → अपभ्रंश → अवहट्ठ
(B) प्राकृत → पालि → अवहट्ठ → अपभ्रंश
(C) पालि → अपभ्रंश → प्राकृत → अवहट्ठ
(D) अपभ्रंश → पालि → प्राकृत → अवहट्ठ

12. 'गाहा सत्तसई' (गाथा सप्तशती) किस प्राकृत की रचना है और इसके संग्रहकर्ता कौन हैं?
(A) शौरसेनी — वररुचि
(B) महाराष्ट्री — हाल (सातवाहन)
(C) अर्धमागधी — हेमचंद्र
(D) मागधी — गुणाढ्य

13. कथन (A) : संस्कृत नाटकों में मागधीभाषी पात्र 'राजा' को 'लाजा' कहते हैं।
कारण (R) : मागधी प्राकृत में 'र' के स्थान पर 'ल' तथा 'स' के स्थान पर 'श' की प्रवृत्ति है।
(A) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या है
(B) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या नहीं है
(C) A सही है, R गलत है
(D) A गलत है, R सही है

14. 'अपभ्रंश का वाल्मीकि' तथा 'अपभ्रंश का भवभूति' क्रमशः किन्हें कहा जाता है?
(A) सरहपा, धनपाल (B) स्वयंभू, पुष्पदंत (C) पुष्पदंत, स्वयंभू (D) हेमचंद्र, जोइंदु

15. ग्रियर्सन के वर्गीकरण में 'मध्यवर्ती (Mediate)' उपशाखा में कौन-सी भाषा/उपभाषा रखी गई है?
(A) पश्चिमी हिन्दी (B) पूर्वी हिन्दी (C) राजस्थानी (D) बिहारी

16. निम्न में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है?
(A) वररुचि — प्राकृतप्रकाश
(B) दामोदर पंडित — उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण
(C) ज्योतिरीश्वर ठाकुर — वर्णरत्नाकर
(D) गुलेरी — हिन्दी भाषा का इतिहास

17. 'हिन्दी' शब्द के विषय में सही कथन-समुच्चय चुनिए —
(i) यह शब्द फारसी मूल का है।
(ii) 'सिंधु' के 'स' का 'ह' में परिवर्तन ईरानी ध्वनि-प्रवृत्ति है।
(iii) प्रारंभ में 'हिन्दी' शब्द केवल खड़ीबोली का वाचक था।
(A) i और ii (B) ii और iii (C) i और iii (D) सभी

18. वैदिक संस्कृत की 'ळ' ध्वनि के विषय में सही कथन है —
(A) यह लौकिक संस्कृत में भी सुरक्षित रही
(B) यह केवल ऋग्वेद में मिलती है और लौकिक संस्कृत में लुप्त हो गई
(C) यह मागधी प्राकृत की देन है
(D) यह फारसी से आगत ध्वनि है

19. संस्कृत 'हस्त' से हिन्दी 'हाथ' के विकास में कौन-सी ध्वनि-प्रक्रियाएं क्रमशः घटित हुईं?
(A) समीकरण, फिर क्षतिपूरक दीर्घीकरण
(B) क्षतिपूरक दीर्घीकरण, फिर समीकरण
(C) स्वरभक्ति, फिर लोप
(D) महाप्राणीकरण, फिर अनुनासिकता

20. राहुल सांकृत्यायन की दृष्टि में हिन्दी के प्रथम कवि कौन हैं?
(A) चंदबरदाई (B) सरहपा (C) स्वयंभू (D) अमीर खुसरो

21. सुमेलित कीजिए —
सूची-I (बोली) : (a) बांगरू (b) ढूंढाड़ी (c) खल्टाही (d) कौरवी
सूची-II (अपर नाम/वर्ग) : (1) छत्तीसगढ़ी (2) हरियाणवी (3) खड़ीबोली (4) जयपुरी
(A) a-2, b-4, c-1, d-3
(B) a-2, b-1, c-4, d-3
(C) a-3, b-4, c-1, d-2
(D) a-4, b-2, c-1, d-3

22. कथन (A) : ग्रियर्सन ने बिहारी वर्ग को हिन्दी से पृथक् बहिर्वर्ती उपशाखा में रखा।
कारण (R) : बिहारी बोलियां मागधी अपभ्रंश से विकसित हैं, जबकि पश्चिमी हिन्दी शौरसेनी से।
(A) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या है
(B) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या नहीं है
(C) A सही है, R गलत है
(D) A गलत है, R सही है

23. निम्न में से किस बोली में 'ने' परसर्ग की रचना मिलती है?

(A) अवधी (B) ब्रजभाषा (C) खड़ीबोली (D) मैथिली

24. 'चंदायन' के विषय में कौन-सा कथन सही नहीं है?

(A) इसके रचयिता मुल्ला दाऊद हैं

(B) यह अवधी का प्रथम सूफी प्रेमाख्यान माना जाता है

(C) इसकी रचना 'पद्मावत' के बाद हुई

(D) इसका अपर नाम 'लोरकहा' है

25. ओकार-बहुलता, उकार-बहुलता और आकारांत प्रवृत्ति क्रमशः किन बोलियों की पहचान हैं?

(A) ब्रज, अवधी, खड़ीबोली

(B) अवधी, ब्रज, खड़ीबोली

(C) खड़ीबोली, अवधी, ब्रज

(D) ब्रज, खड़ीबोली, अवधी

26. आठवीं अनुसूची में सम्मिलित होने वाली हिन्दी-क्षेत्र की बोली/भाषा और संबंधित संविधान संशोधन का सही युग्म है —

(A) मैथिली — 71वां संशोधन, 1992

(B) नेपाली — 92वां संशोधन, 2003

(C) मैथिली — 92वां संशोधन, 2003

(D) भोजपुरी — 92वां संशोधन, 2003

27. 'पृथ्वीराज रासो' की भाषा-परंपरा तथा चारण-काव्य की भाषा-शैली क्रमशः कहलाती हैं —

(A) डिंगल, पिंगल (B) पिंगल, डिंगल (C) अवहट्ठ, डिंगल (D) पिंगल, ब्रजबुलि

28. निम्न कथनों में सत्य चुनिए —

(i) कुमाऊंनी और गढ़वाली मध्य पहाड़ी की बोलियां हैं।

(ii) नेपाली का लोकनाम खसकुरा/गोरखाली है।

(iii) पहाड़ी बोलियों पर तिब्बती-बर्मी संपर्क का प्रभाव है।

(iv) पश्चिमी पहाड़ी का प्रतिनिधि रूप मगही है।

(A) i, ii, iii (B) ii, iii, iv (C) i, iii, iv (D) सभी

29. खड़ीबोली के 'खड़ी' विशेषण की व्याख्या के रूप में कौन-सा मत प्रचलित नहीं है?

(A) खरी अर्थात् शुद्ध बोली

(B) ब्रज की 'पड़ी' बोली की तुलना में ऋजु/कठोर बोली

(C) खड़ी अर्थात् स्थिर/प्रचलित बोली

(D) खड़ी अर्थात् पर्वतीय क्षेत्र की बोली

30. जनगणना-2011 के अनुसार हिन्दी को मातृभाषा घोषित करने वालों का अनुपात लगभग है —

(A) 26% (B) 36% (C) 43.6% (D) 52%

31. सहायक क्रिया 'छै', 'बा', 'अछि', 'हवय' क्रमशः किन बोलियों की पहचान हैं?

(A) राजस्थानी, भोजपुरी, मैथिली, छत्तीसगढ़ी

(B) भोजपुरी, राजस्थानी, मगही, बघेली

(C) राजस्थानी, मगही, मैथिली, अवधी

(D) मारवाड़ी, मैथिली, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी

32. 'फिजी हिन्दी' का भाषिक आधार मुख्यतः है —

(A) खड़ीबोली-हरियाणवी (B) अवधी-भोजपुरी मिश्रण (C) ब्रज-कन्नौजी (D) मारवाड़ी-मालवी

33. कथन (A) : चटर्जी की दृष्टि में बिहारी बोलियों का निकट-संबंध बांग्ला-असमिया-उड़िया से है।

कारण (R) : चारों का विकास मागधी अपभ्रंश से हुआ है।

(A) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या है

(B) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या नहीं है

(C) A सही है, R गलत है

(D) A गलत है, R सही है

34. आल्हा-गायन परंपरा एवं 'सांग/रागनी' लोक-रूप क्रमशः संबद्ध हैं —

(A) बुंदेली; हरियाणवी (B) ब्रज; मेवाती (C) अवधी; बुंदेली (D) छत्तीसगढ़ी; मालवी

35. 'मोर-तोर' सर्वनाम, '-इस' भूतकालिक रूप तथा 'बाटे' सहायक क्रिया — तीनों एक साथ संकेत करते हैं —

(A) ब्रज की (B) अवधी की (C) भोजपुरी की (D) मगही की

36. कथन (A) : हिन्दी और उर्दू भाषाशास्त्रीय दृष्टि से एक ही भाषा की दो शैलियां हैं।

कारण (R) : दोनों का व्याकरणिक ढांचा खड़ीबोली है; भेद लिपि और शब्द-स्रोत के स्तर पर है।

(A) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या है

(B) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या नहीं है

(C) A सही है, R गलत है

(D) A गलत है, R सही है

37. दक्खिनी साहित्य का सही कालानुक्रम चुनिए —

(A) गेसूदराज़ → वजही → वली

(B) वजही → गेसूदराज़ → वली

(C) वली → वजही → गेसूदराज़

(D) गेसूदराज़ → वली → वजही

38. 'ज़बान-ए-उर्दू-ए-मुअल्ला' का शाब्दिक आशय है —

(A) उच्च कोटि की काव्यभाषा

(B) शाही शिविर/छावनी की भाषा

(C) मदरसों की भाषा

(D) बाज़ार की मिश्रित बोली

39. हिन्दुस्तानी के संदर्भ में कौन-सा कथन असत्य है?

(A) गांधी जी इसे उभय-लिपिक राष्ट्रभाषा बनाना चाहते थे

(B) हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना 1942 में वर्धा में हुई

(C) संविधान के अनुच्छेद 343 में हिन्दुस्तानी को राजभाषा घोषित किया गया

(D) अनुच्छेद 351 में 'हिन्दुस्तानी' शब्द का उल्लेख है

40. फोर्ट विलियम कॉलेज से संबद्ध हिन्दी गद्यकार-युग्म है —

(A) इंशा अल्ला खां — सदासुखलाल

(B) लल्लूलाल — सदल मिश्र

(C) लल्लूलाल — इंशा अल्ला खां

(D) सदल मिश्र — सदासुखलाल

41. "हिन्दी और उर्दू दो बोली न्यारी" — यह स्थापना किसकी है?

(A) राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद'

(B) राजा लक्ष्मण सिंह

(C) भारतेंदु हरिश्चंद्र

(D) महावीर प्रसाद द्विवेदी

42. मैकडॉनेल आदेश (1900) का प्रतिफल था —

(A) फारसी की अदालती वापसी

(B) संयुक्त प्रांत की कचहरियों में नागरी लिपि को समान मान्यता

(C) उर्दू का राजभाषा-पद

(D) हिन्दी का संघ-राजभाषा पद

43. दक्खिनी के विषय में सत्य कथन छांटिए —

(i) यह खड़ीबोली का दक्षिणी साहित्यिक रूप है।

(ii) इसमें मराठी-तेलुगु का संपर्क-प्रभाव है।

(iii) इसका साहित्य मुख्यतः दरबारी शृंगार-काव्य है।

(iv) कुली कुतुबशाह इसके साहिबे-दीवान कवि हैं।

(A) i, ii, iv (B) i, iii, iv (C) ii, iii, iv (D) सभी

44. "व्याकरण एक, कोश-वस्त्र भिन्न" — यह सूत्र किन भाषिक रूपों के संबंध पर लागू होता है?

(A) हिन्दी-बांग्ला (B) हिन्दी-उर्दू-दक्खिनी-हिन्दुस्तानी (C) हिन्दी-मराठी (D) ब्रज-अवधी

45. अमीर खुसरो के विषय में सत्य कथन छांटिए —

(i) वे फारसी और हिन्दवी दोनों के रचनाकार थे।

(ii) पहेलियां-मुकरियां उनकी हिन्दवी-परंपरा की देन मानी जाती हैं।

(iii) वे फोर्ट विलियम कॉलेज से संबद्ध थे।

(A) i, ii (B) ii, iii (C) i, iii (D) सभी

46. NCPUL किस भाषा के विकास की राष्ट्रीय संस्था है?

(A) हिन्दुस्तानी (B) उर्दू (C) सिंधी (D) फारसी

47. प्रेमचंद का भाषिक महत्व इस खंड की दृष्टि से है —

(A) विशुद्ध संस्कृतनिष्ठ शैली के प्रतिमान

(B) हिन्दी-उर्दू के बीच हिन्दुस्तानी गद्य-सेतु के व्यावहारिक प्रतिमान

(C) दक्खिनी के अंतिम कवि

(D) खड़ीबोली-विरोधी

48. सुमेलित कीजिए —

सूची-I : (a) केंद्रीय हिन्दी निदेशालय (b) CSTT (c) केंद्रीय हिन्दी संस्थान (d) विश्व हिन्दी सचिवालय

सूची-II : (1) आगरा — हिन्दी शिक्षण (2) मॉरीशस (3) 1960 — वर्तनी-मानकीकरण (4) 1961 — पारिभाषिक शब्दावली

(A) a-3, b-4, c-1, d-2

(B) a-4, b-3, c-1, d-2

(C) a-3, b-4, c-2, d-1

(D) a-1, b-4, c-3, d-2

49. देवनागरी के विकास का सही अनुक्रम है —

(A) ब्राह्मी → कुटिल → गुप्त → नागरी

(B) ब्राह्मी → गुप्त → कुटिल → नागरी

(C) खरोष्ठी → ब्राह्मी → गुप्त → नागरी

(D) ब्राह्मी → शारदा → गुप्त → नागरी

50. कथन (A) : देवनागरी अक्षरात्मक (Abugida) लिपि है।
कारण (R) : इसके प्रत्येक व्यंजन-वर्ण में 'अ' स्वर अंतर्निहित रहता है और अन्य स्वर मात्राओं से जोड़े जाते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या है
(B) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या नहीं है
(C) A सही है, R गलत है
(D) A गलत है, R सही है
51. ब्राह्मी लिपि का उद्घाचन किसने और कब किया?
(A) विलियम जोन्स, 1784 (B) जेम्स प्रिंसेप, 1837 (C) कनिंघम, 1861 (D) मैक्समूलर, 1856
52. मानक हिन्दी वर्तनी के अनुसार शुद्ध रूप-समुच्चय है —
(A) सम्पूर्ण, सन्त, गङ्गा
(B) संपूर्ण, संत, गंगा
(C) संपूर्ण, सन्त, गंगा
(D) सम्पूर्ण, संत, गङ्गा
53. 'हंस–हँस' युग्म किस लेखन-चिह्न की अनिवार्यता सिद्ध करता है?
(A) अनुस्वार (B) विसर्ग (C) चंद्रबिंदु (D) हलंत
54. देवनागरी के दोषों में सम्मिलित नहीं है —
(A) मात्राओं का चतुर्दिक् स्थान
(B) 'र' के बहुरूप
(C) संयुक्ताक्षरों की जटिलता
(D) ध्वनि-संकेत असंगति का रोमन-स्तरीय व्यापक वैषम्य
55. 'अ की बारहखड़ी' के प्रयोग-प्रस्ताव तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन की लिपि-सुधार समिति (1935) से क्रमशः संबद्ध हैं —
(A) तिलक; श्यामसुंदर दास
(B) सावरकर बंधु; काका कालेलकर
(C) निराला; धीरेंद्र वर्मा
(D) महावीर प्रसाद द्विवेदी; बी.जी. खेर
56. मानक वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध समुच्चय है —
(A) गई, हुए, जाएंगे, के लिए
(B) गयी, हुये, जायेंगे, के लिये
(C) गई, हुये, जाएंगे, के लिये
(D) गयी, हुए, जायेंगे, के लिए
57. 'वाङ्मय' में पंचमाक्षर ही क्यों अनिवार्य है?
(A) तत्सम होने से
(B) पंचम वर्ण के बाद सवर्गीय व्यंजन-संयोग होने से अनुस्वार-नियम लागू नहीं होता
(C) 'ङ' का अनुस्वार बनता ही नहीं
(D) शिरोरेखा-बाधा से
58. नागरी लिपि में वर्तमान व्यवहार में लिखी जाने वाली अनुसूचित भाषाओं का सही समूह है —
(A) हिन्दी, मराठी, नेपाली, संस्कृत, मैथिली, बोडो, डोगरी, कोंकणी, संथाली
(B) हिन्दी, गुजराती, बांग्ला, मराठी
(C) हिन्दी, पंजाबी, सिंधी, उर्दू
(D) केवल हिन्दी और संस्कृत
59. कथन (A) : यूनिकोड-युग में हिन्दी के रोमनीकरण का तकनीकी तर्क निर्बल हो गया है।
कारण (R) : यूनिकोड देवनागरी को कम्प्यूटिंग के हर स्तर (खोज, OCR, TTS, इनपुट) पर पूर्ण समर्थन देता है।
(A) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या है
(B) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या नहीं है
(C) A सही है, R गलत है
(D) A गलत है, R सही है

उत्तरमाला एवं व्याख्या

1. (B) OIA 'कर्म' → MIA समीकरण से 'कम्म' → NIA में द्वित्व-सरलीकरण + क्षतिपूरक दीर्घीकरण से 'काम'। द्वित्व-रूप मध्यवर्ती अवस्था की पहचान है।
2. (A) 'रत्न' के संयुक्त व्यंजन के बीच 'अ' का आगम स्वर-भक्ति है; 'दन्त' में नासिक्य-व्यंजन का लोप होकर पूर्व स्वर अनुनासिक-दीर्घ हुआ — दांत।
3. (B) 'इस्त्वार द ला लितरेत्यूर ऐंदुई ऐ ऐंदुस्तानी' (1839) से तासी हिन्दी साहित्येतिहास-लेखन के प्रवर्तक माने जाते हैं; वर्णानुक्रमी पद्धति अपनाई थी। (यह तथ्य भाषा-इतिहास दोनों इकाइयों में काम आता है।)
4. (B) उकारांत कर्ता-रूपों और MIA-उत्तर ध्वनि-संस्कार वाली यह शैली अपभ्रंश-दोहा परंपरा की है — हेमचंद्र-उद्धृत दोहों की प्रसिद्ध बानगी, जिसे गुलेरी 'पुरानी हिन्दी' की सीमा में भी रखते हैं — दोनों आसन्न अवस्थाओं का संधि-साक्ष्य।
5. (D) ग्रियर्सन भी NIA का उदय लगभग 1000 ई. मानते हैं, 14वीं शती नहीं। 14वीं शती जैसा विलंबित मत किसी मानक विद्वान का नहीं है।
6. (A) नाटकों में निम्न वर्ग के पात्रों की भाषा मागधी थी; महाराष्ट्री गीतों/पद्यों की श्रेष्ठ साहित्यिक प्राकृत थी — अतः (iii) असत्य। शेष तीनों कथन मानक तथ्य हैं।
7. (A) शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, महाराष्ट्री, पैशाची, ब्राचड — इन्हीं अपभ्रंशों के क्षेत्रीय रूपों से क्रमशः पश्चिमी हिन्दी-राजस्थानी-गुजराती, बिहारी-बांग्ला-असमिया-उड़िया, पूर्वी हिन्दी, मराठी, पंजाबी-लहंदा तथा सिंधी का विकास हुआ। कारण कथन की सम्यक् व्याख्या करता है।
8. (A) मागधी अपभ्रंश → बिहारी वर्ग (भोजपुरी); ब्राचड → सिंधी; महाराष्ट्री → मराठी; अर्धमागधी → पूर्वी हिन्दी (अवधी)। यह वंशावली NET की सर्वाधिक आवर्ती सुमेलन-सामग्री है।

9. (B) 'कीर्तिलता' में विद्यापति ने देशी वचनों की मधुरता का उल्लेख कर अपनी भाषा को 'अवहट्ठा' कहा है। 'पदावली' मैथिली में है — दोनों में भ्रम कराने वाले विकल्प परीक्षा में आते हैं। अब्दुर रहमान 'संदेश रासक' (अवहट्ठ) के कवि हैं।

10. (D) केन्तुम-शतम् विभाजन का आधार ध्वन्यात्मक है — मूल भारोपीय कण्ठ्य 'क्' ध्वनि का यथावत् रहना (केन्तुम) या ऊष्म 'श्/स्' में बदलना (शतम्); रूप-रचना नहीं। शेष तीनों कथन सही हैं।

11. (A) MIA की तीन अवस्थाएं — प्रथम (पालि, 500 ई.पू.–1 ई.), द्वितीय (साहित्यिक प्राकृतें, 1–500 ई.), तृतीय (अपभ्रंश, 500–1000 ई.); अवहट्ठ अपभ्रंश का उत्तरकालीन रूप (≈900–1300 ई.) है।

12. (B) 'गाहा सत्तसई' महाराष्ट्री प्राकृत का श्रेष्ठ मुक्तक-संग्रह है, जिसके संग्रहकर्ता सातवाहन नरेश हाल माने जाते हैं। गुणाढ्य की 'बृहत्कथा' पैशाची में है; वररुचि प्राकृत-वैयाकरण हैं।

13. (A) र → ल और स → श मागधी की अभिज्ञान-विशेषताएं हैं (अन्य प्राकृतों में श → स की उलटी प्रवृत्ति है)। अतः दोनों कथन सही हैं और R, A की व्याख्या करता है।

14. (B) 'पउम चरिउ' (रामकथा) के रचयिता स्वयंभू को 'अपभ्रंश का वाल्मीकि' तथा 'महापुराण' के रचयिता पुष्पदंत को 'अपभ्रंश का भवभूति' कहा जाता है। धनपाल की 'भविसयत्तकहा' प्रथम अपभ्रंश कथा-काव्य है।

15. (B) ग्रियर्सन ने पूर्वी हिन्दी (अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी) को अंतःवर्ती और बहिर्वर्ती के बीच की 'मध्यवर्ती' कड़ी माना। पश्चिमी हिन्दी-राजस्थानी अंतःवर्ती में, बिहारी बहिर्वर्ती (पूर्वी समुदाय) में है।

16. (D) चंद्रधर शर्मा गुलेरी का प्रसिद्ध निबंध 'पुरानी हिन्दी' है; 'हिन्दी भाषा का इतिहास' धीरेंद्र वर्मा की कृति है। शेष युग्म सही हैं।

17. (A) 'हिन्दी' फारसी मूल का शब्द है; स → ह ईरानी प्रवृत्ति से 'सिंधु' → 'हिंदू' → 'हिंद' बना। प्रारंभ में यह शब्द हिंद (भारत) की किसी भी भाषा के लिए प्रयुक्त होता था, केवल खड़ीबोली के लिए नहीं — अतः (iii) असत्य।

18. (B) मूर्धन्य पार्श्विक 'ळ' (एवं 'ळह') ऋग्वेद की विशिष्ट ध्वनि है ('अग्निमीळे पुरोहितम्'); लौकिक संस्कृत में यह 'ड/ढ' या 'ल' में विलीन हो गई। आज यह मराठी, राजस्थानी, हरियाणवी आदि में जीवित है।

19. (A) 'हस्त' → प्राकृत 'हत्थ' (स्त का त्थ में समीकरण/Assimilation) → हिन्दी 'हाथ' (द्वित्व का सरलीकरण और पूर्व स्वर का क्षतिपूरक दीर्घीकरण अ → आ)। यही प्रक्रिया कर्म → कम्म → काम, दुग्ध → दुद्ध → दूध में है।

20. (B) राहुल सांकृत्यायन ने सिद्ध कवि सरहपा (दोहाकोश, 769 ई.) को हिन्दी का प्रथम कवि माना। चंदबरदाई को शुक्ल जी की परंपरा में प्रथम महाकवि कहा गया; खुसरो खड़ीबोली के प्रारंभिक प्रयोक्ता हैं।

21. (A) बांगरू = हरियाणवी; ढूंढाड़ी = जयपुरी; खल्टाही = छत्तीसगढ़ी का पुराना नाम; कौरवी = खड़ीबोली (राहुल सांकृत्यायन)। नामांतर-सुमेलन इस खंड का स्थायी प्रश्न-क्षेत्र है।

22. (A) ग्रियर्सन का बहिर्वर्ती वर्ग पूर्वी समुदाय (बिहारी, बांग्ला, असमिया, उड़िया) को समेटता है; इसका भाषाशास्त्रीय आधार यही है कि इनका स्रोत मागधी अपभ्रंश है, जो शौरसेनी-व्युत्पन्न मध्यदेशीय हिन्दी से भिन्न वंश है। अतः R, A की उपयुक्त व्याख्या है।

23. (C) 'ने' परक एर्गेटिव रचना पश्चिमी प्रवृत्ति है — खड़ीबोली (और बांगरू) में मिलती है; ब्रज, अवधी, बिहारी वर्ग में इसका अभाव है (पूर्वी क्रिया-रूप कर्ता-अन्वित होते हैं)। यह खड़ीबोली-अभिज्ञान का प्रमुख सूत्र है।

24. (C) 'चंदायन' (1379 ई.) 'पद्मावत' (1540 ई.) से लगभग डेढ़ सदी पूर्व की रचना है — सूफी प्रेमाख्यान परंपरा का प्रारंभ इसी से माना जाता है। शेष कथन सही हैं।

25. (A) ब्रज ओकार-बहुला (गयो), अवधी उकार-बहुला (गयउ), खड़ीबोली आकारांत (गया) — यह त्रिक NET का क्लासिक प्रश्न है।

26. (C) 92वें संशोधन (2003) से मैथिली, संथाली, डोगरी, बोडो जोड़ी गईं; 71वें (1992) से नेपाली, कोंकणी, मणिपुरी। भोजपुरी अब तक अनुसूची से बाहर है (मांग लंबित)।

27. (B) रासो की भाषा पिंगल-परंपरा (राजस्थान-प्रयुक्त ब्रज) से जुड़ती है; चारणों की वीरकाव्य-शैली डिंगल (साहित्यिक मारवाड़ी) कहलाती है। ब्रजबुलि बंगाल-असम की कृत्रिम वैष्णव काव्यभाषा है।

28. (A) मगही बिहारी वर्ग की बोली है, पश्चिमी पहाड़ी की नहीं — (iv) असत्य; पश्चिमी पहाड़ी में हिमाचली बोलियां (कांगड़ी, मंडियाली आदि) आती हैं। शेष तीनों कथन सही हैं।

29. (D) 'पर्वतीय क्षेत्र' वाली व्याख्या कोई मत नहीं है; खरी (शुद्ध), पड़ी के विपरीत खड़ी (कठोर/ऋजु) और स्थिर/प्रचलित — ये तीन व्याख्याएं विद्वानों में प्रचलित हैं।

30. (C) 2011 की जनगणना में लगभग 52.8 करोड़ (43.63%) व्यक्तियों ने हिन्दी को मातृभाषा बताया — इसमें भोजपुरी आदि अनेक बोलियां सम्मिलित हैं। द्वितीय/तृतीय भाषा के रूप में जानने वालों सहित यह अनुपात बहुत ऊंचा हो जाता है।

31. (A) 'छै' राजस्थानी (मारवाड़ी-ढूंढाड़ी), 'बा/बाटे' भोजपुरी, 'अछि' मैथिली, 'हवय/हे' छत्तीसगढ़ी की विभेदक सहायक क्रियाएं हैं — द्रुत-अभिज्ञान सूत्र।

32. (B) गिरमिटिया मजदूर मुख्यतः अवध-भोजपुर क्षेत्र से गए थे; फिजी हिन्दी (फिजी बात) अवधी-भोजपुरी आधार पर विकसित कोइने (Koine) है — सरनामी (सूरीनाम) की भी यही प्रकृति है।

33. (A) मागधी अपभ्रंश की पूर्वी संततियां ही बिहारी-बांग्ला-असमिया-उड़िया हैं; इसीलिए चटर्जी (और ग्रियर्सन) ने बिहारी को प्राच्य/बहिर्वर्ती समुदाय में रखा। दोनों कथन सही, R व्याख्यापक।

34. (A) आल्हा (जगनिक-परंपरा, आल्हा-ऊदल वीरगाथा) बुंदेलखंड की पहचान है; सांग (स्वांग) और रागनी हरियाणवी लोकमंच के रूप हैं। पंडवानी छत्तीसगढ़ की (तीजन बाई) — सुमेलन सतर्कता।

35. (B) तीनों लक्षण अवधी के क्लासिक अभिज्ञान-चिह्न हैं (मानस-पद्मावत की भाषा में सुलभ)। भोजपुरी में 'बा' तो है, पर 'मोर-तोर + -इस' संयोजन अवधी-विशिष्ट है।

36. (A) रूपिम-विन्यास, कारक-व्यवस्था, क्रिया-रचना — सब समान; अंतर लिपि (नागरी/नस्तालीक़) और उच्च शब्दावली (तत्सम/अरबी-फारसी) में है। अतः दोनों कथन सही और R व्याख्यापक।

37. (A) गेसूदराज़ (14वीं–15वीं सदी, 'मेराजुल आशिकीन') → मुल्ला वजही (17वीं सदी, 'सबरस' 1635) → वली औरंगाबादी (17वीं उत्तरार्ध–18वीं पूर्वार्ध)। वली के दिल्ली-प्रभाव से उत्तर-भारतीय उर्दू परंपरा चली।

38. (B) 'उर्दू-ए-मुअल्ला' = (शाहजहानाबाद का) शाही शिविर/उच्च छावनी; उसकी ज़बान ही संक्षेप में 'उर्दू' कहलाई। 'ओर्दू' तुर्की मूल का शब्द है।

39. (C) अनुच्छेद 343 में 'देवनागरी लिपि में हिन्दी' संघ की राजभाषा है, हिन्दुस्तानी नहीं; हिन्दुस्तानी का उल्लेख अनुच्छेद 351 (हिन्दी के विकास का निदेश) में आत्मसात्-स्रोत के रूप में है।

40. (B) फोर्ट विलियम कॉलेज (1800, कलकत्ता; जॉन गिलक्राइस्ट) के भाखा-मुंशी लल्लूलाल ('प्रेमसागर') और सदल मिश्र ('नासिकेतोपाख्यान') थे; इंशा और सदासुखलाल कॉलेज से स्वतंत्र थे — चारों मिलकर 'गद्य के चार स्तंभ' कहलाते हैं।

41. (B) राजा लक्ष्मण सिंह विशुद्ध (संस्कृतनिष्ठ) हिन्दी के पक्षधर थे और हिन्दी-उर्दू को पृथक् मानते थे; राजा शिवप्रसाद मिश्रित आमफहम शैली के समर्थक थे — दोनों का शैली-द्वंद्व 19वीं सदी के गद्य-विकास की धुरी है।

42. (B) लेफ्टिनेंट गवर्नर एंटनी मैकडॉनेल के आदेश से संयुक्त प्रांत की अदालतों में नागरी को उर्दू के समकक्ष मान्यता मिली; मालवीय जी का अभिवेदन और नागरी प्रचारिणी सभा का अभियान इसकी पृष्ठभूमि थे।

43. (A) दक्खिनी साहित्य की मुख्य प्रवृत्ति सूफी-धार्मिक-लोकोन्मुख है, दरबारी शृंगार नहीं — (iii) असत्य। शेष कथन सही हैं।

44. (B) चारों खड़ीबोली-व्याकरण साझा करते हैं; भेद शब्द-स्रोत (तत्सम/अरबी-फारसी/मिश्र/देशी-दक्षिणी) और लिपि का है — खंड-3 की केंद्रीय स्थापना।

45. (A) खुसरो (1253–1325) सल्तनत-कालीन हैं; फोर्ट विलियम (1800) से संबद्धता कालदोष — (iii) असत्य। शेष दोनों कथन मानक तथ्य हैं।

46. (B) राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद (1996, शिक्षा मंत्रालय) उर्दू के संवर्धन की नोडल संस्था है; सिंधी हेतु NCPSL पृथक् परिषद है।

47. (B) उर्दू ('सोज़े-वतन') से हिन्दी में आए प्रेमचंद की किस्सागो भाषा हिन्दुस्तानी मध्य-रेखा की मिसाल है — सहज मिश्र कोश, जन-बोधगम्यता।

48. (A) निदेशालय (1960, दिल्ली) — देवनागरी/वर्तनी मानकीकरण; शब्दावली आयोग (1961); संस्थान आगरा — शिक्षण-प्रशिक्षण; सचिवालय — मॉरीशस। संस्था-कार्य सुमेलन उच्च-आवृत्ति प्रश्न है।

49. (B) ब्राह्मी की उत्तरी शैली से गुप्तकालीन लिपि, उससे वक्र रेखाओं वाली कुटिल, और कुटिल से नागरी/देवनागरी का विकास हुआ। खरोष्ठी समानांतर लिपि थी, पूर्वज नहीं; शारदा उत्तर-पश्चिमी शाखा है।

50. (A) 'क' = क्+अ; की, कु, के मात्रा-योजन से; हलंत से स्वर-निरसन — यही अक्षरात्मकता है, जो रोमन की वर्णात्मकता से भिन्न है।

51. (B) ईस्ट इंडिया कंपनी के टकसाल-अधिकारी जेम्स प्रिंसेप ने 1837 में ब्राह्मी के वर्ण पहचान कर अशोक के अभिलेख पढ़े; विलियम जोन्स एशियाटिक सोसाइटी (1784) से संबद्ध हैं; कनिंघम पुरातत्व सर्वेक्षण से।

52. (B) पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार-लेखन मानक है — संपूर्ण, संत, गंगा। पंचमाक्षर-रूप अशुद्ध नहीं, पर 'मानक' पूछे जाने पर अनुस्वार-रूप ही उत्तर है। (अपवाद: वाङ्मय, उन्नति, सम्मान — जहां पंचम के बाद सवर्गीय व्यंजन/नासिक्य है।)

53. (C) 'हंस' (पक्षी — अनुस्वार) और 'हँस' (हँसना — अनुनासिक) का अर्थ-भेद चंद्रबिंदु से ही व्यक्त होता है; अतः अर्थ-भ्रम वाले स्थलों पर ँ अनिवार्य है — मानकीकरण-नियमों का स्पष्ट निर्देश।

54. (D) देवनागरी की ध्वनि-संगति अत्यंत उच्च है — रोमन जैसा (cut-put, knife के k-लोप जैसा) व्यापक वैषम्य उसमें नहीं; यही उसका प्रमुख गुण है। शेष तीनों वास्तविक सीमाएं हैं।

55. (B) सावरकर बंधुओं ने मात्रा-त्याग कर 'अ'-आधारित स्वर-लेखन (अ की बारहखड़ी) सुझाया; हिन्दी साहित्य सम्मेलन की लिपि-सुधार समिति (1935) काका कालेलकर की अध्यक्षता में बनी; उ.प्र. सरकार की समिति (1947) आचार्य नरेंद्र देव की अध्यक्षता में थी। खेर राजभाषा आयोग (1955) से संबद्ध हैं।

56. (A) मानकीकरण-नियम: यकार-रहित स्वर-रूप मानक — गई, हुए, जाएंगे, के लिए; यकार-युक्त रूप अमानक (अशुद्ध नहीं तो भी 'मानक' की कसौटी पर अस्वीकार्य)।

57. (B) नियम — पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार तभी, जब आगे भिन्न-वर्गीय व्यंजन हो; वाङ्मय में ङ+म (नासिक्य-संयोग) की स्थिति में मूल पंचमाक्षर सुरक्षित रहता है — अन्न, सम्मान भी इसी कोटि में।

58. (A) नौ भाषाओं का देवनागरी-व्यवहार प्रचलित है (संथाली में ओलचिकी के साथ-साथ; कोंकणी गोवा में नागरी-आधिकारिक)। गुजराती-बांग्ला-पंजाबी की अपनी लिपियां हैं; उर्दू नस्तालीक़ में।

59. (A) रोमनीकरण की पुरानी दलील टंकण-मुद्रण-तकनीक की सीमा थी; यूनिकोड-पारितंत्र ने नागरी को पूर्ण डिजिटल-सक्षम बना दिया — अतः R, A की उपयुक्त व्याख्या है।

काव्यशास्त्र एवं काव्यांग

प्रश्न-संख्या: 95 (क्रमांक 60–154)

60. 'शृंगार' रस का स्थायी भाव है —
(A) रति (B) उत्साह (C) हास (D) शोक

61. 'वीभत्स' रस का स्थायी भाव है —
(A) भय (B) जुगुप्सा (C) क्रोध (D) विस्मय

62. 'अद्भुत' रस का स्थायी भाव है —
(A) विस्मय (B) हास (C) उत्साह (D) निर्वेद

63. 'शांत' रस का स्थायी भाव है —
(A) निर्वेद (शम) (B) रति (C) भय (D) शोक

64. 'वात्सल्य' रस का स्थायी भाव है —
(A) वत्सल/वात्सल्य रति (B) रति (C) स्नेह (D) ममता

65. 'करुण' रस का स्थायी भाव है —
(A) शोक (B) निर्वेद (C) दया (D) ग्लानि

66. रसराज किसे कहा जाता है?
(A) वीर (B) शृंगार (C) करुण (D) शांत

67. 'उत्तररामचरित' के आधार पर भवभूति ने किसे एकमात्र रस माना?
(A) शृंगार (B) करुण (C) वीर (D) शांत

68. संचारी (व्यभिचारी) भावों की संख्या मानी गई है —
(A) 9 (B) 11 (C) 33 (D) 36

69. आलंबन और उद्दीपन किसके भेद हैं?
(A) अनुभाव (B) विभाव (C) संचारी भाव (D) स्थायी भाव

70. 'मैं सत्य कहता हूँ सखे! सुकुमार मत जानो मुझे, यमराज से भी युद्ध को प्रस्तुत सदा मानो मुझे' — रस है —
(A) वीर (B) रौद्र (C) भयानक (D) शांत

71. 'माधुर्य' गुण किस रस में विशेष उपयुक्त है?
(A) वीर (B) शृंगार, करुण, शांत (C) रौद्र (D) वीभत्स

72. 'ओज' गुण में किन वर्णों की प्रधानता होती है?
(A) कोमल, अनुनासिक वर्ण (B) ट-वर्ग, संयुक्त व द्वित्व वर्ण (C) केवल स्वर (D) ल, र, म

73. 'प्रसाद' गुण का मूल लक्षण है —
(A) कठिन शब्द (B) अर्थ की सरल, तत्काल प्रतीति (C) लंबे समास (D) अनुनासिकता

74. 'श्रुतिकटुत्व' दोष है —
(A) कर्णकटु, कठोर वर्णों का अनुचित प्रयोग
(B) ग्रामीण शब्द-प्रयोग
(C) अप्रचलित अर्थ
(D) क्रम-भंग

75. 'ग्राम्यत्व' दोष का आशय है —
(A) अशिष्ट/गँवारू शब्दों का प्रयोग (B) कठोर वर्ण (C) क्रम-भंग (D) कठिन अर्थ

76. 'अप्रतीतत्व' दोष तब होता है जब —

(A) शब्द किसी शास्त्र-विशेष में ही प्रचलित अर्थ में प्रयुक्त हो
(B) शब्द कर्णकटु हो
(C) क्रम उलट जाए
(D) अर्थ क्लिष्ट हो

77. 'क्लिष्टत्व' दोष है —
(A) अर्थ-बोध में अत्यधिक कठिनाई (B) शब्दों का क्रम-भंग (C) ग्रामीण शब्द (D) पुनरुक्ति

78. 'अक्रमत्व' दोष का अर्थ है —
(A) शब्दों का उचित क्रम में न होना (B) कठिन अर्थ (C) अशिष्ट शब्द (D) पुनरुक्ति

79. शब्द-शक्तियाँ कितनी मानी गई हैं?
(A) दो (B) तीन (C) चार (D) पाँच

80. 'मोहन गधा है' में कौन-सी शब्द-शक्ति है?
(A) अभिधा (B) लक्षणा (C) व्यंजना (D) तात्पर्या

81. 'सूर्य अस्त हो गया' — यह वाक्य चोर के लिए 'चोरी का समय' का अर्थ दे तो शब्द-शक्ति है —
(A) अभिधा (B) लक्षणा (C) व्यंजना (D) गौणी

82. लक्षणा के लिए आवश्यक है —
(A) मुख्यार्थ-बाध, मुख्यार्थ-योग तथा रूढ़ि या प्रयोजन
(B) केवल वक्ता की इच्छा
(C) केवल संकेत-ग्रह
(D) केवल प्रसंग

83. 'संकेत-ग्रह' किस शब्द-शक्ति से संबंधित है?
(A) अभिधा (B) लक्षणा (C) व्यंजना (D) तात्पर्या

84. 'ध्वनि' को काव्य की आत्मा किसने माना?
(A) आनंदवर्धन (B) कुंतक (C) वामन (D) क्षेमेंद्र

85. 'रीतिरात्मा काव्यस्य' — किसका कथन है?
(A) वामन (B) दंडी (C) भामह (D) मम्मट

86. 'वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्' — किसका मत है?
(A) कुंतक (B) आनंदवर्धन (C) क्षेमेंद्र (D) विश्वनाथ

87. 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' — किसकी परिभाषा है?
(A) विश्वनाथ (B) मम्मट (C) जगन्नाथ (D) भरत

88. 'औचित्य' संप्रदाय के प्रवर्तक हैं —
(A) क्षेमेंद्र (B) कुंतक (C) वामन (D) भामह

89. 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि' — काव्य-लक्षण किसका है?
(A) मम्मट (B) विश्वनाथ (C) जगन्नाथ (D) दंडी

90. 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' — किसकी परिभाषा है?
(A) पंडितराज जगन्नाथ (B) विश्वनाथ (C) मम्मट (D) भामह

91. मम्मट ने काव्य-हेतु माने हैं —
(A) शक्ति, निपुणता, अभ्यास (B) प्रतिभा मात्र (C) व्युत्पत्ति मात्र (D) अभ्यास मात्र

92. रस-निष्पत्ति के संबंध में 'भुक्तिवाद' के प्रवर्तक हैं —
(A) भट्ट लोल्लट (B) श्रीशंकुक (C) भट्टनायक (D) अभिनवगुप्त

93. 'अभिव्यक्तिवाद' (रस-निष्पत्ति) के प्रवर्तक हैं —
(A) अभिनवगुप्त (B) भट्टनायक (C) श्रीशंकुक (D) भट्ट लोल्लट

94. 'उत्पत्तिवाद' (आरोपवाद) किससे संबद्ध है?
(A) भट्ट लोल्लट (B) श्रीशंकुक (C) भट्टनायक (D) अभिनवगुप्त

95. 'अनुमितिवाद' के प्रवर्तक हैं —
(A) श्रीशंकुक (B) भट्ट लोल्लट (C) अभिनवगुप्त (D) विश्वनाथ

96. 'साधारणीकरण' की अवधारणा सर्वप्रथम किसने प्रस्तुत की?
(A) भट्टनायक (B) अभिनवगुप्त (C) आनंदवर्धन (D) मम्मट

97. "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्" और "रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्" — क्रमशः किनकी परिभाषाएं हैं?
(A) मम्मट; विश्वनाथ (B) विश्वनाथ; पंडितराज जगन्नाथ (C) भामह; दंडी (D) वामन; कुंतक

98. मम्मट के काव्य-लक्षण "तददोषौ शब्दार्थौ..." में 'अनलंकृती पुनः क्वापि' का आशय —
(A) अलंकार अनिवार्य हैं
(B) कहीं-कहीं अलंकार के बिना भी काव्यत्व संभव है
(C) अलंकार वर्जित हैं
(D) केवल शब्दालंकार मान्य हैं

99. कथन (A) : मम्मट के अनुसार शक्ति, निपुणता और अभ्यास मिलकर ही काव्य-हेतु हैं।
कारण (R) : कारिका में 'हेतुः' एकवचन-पद तीनों के समुदित-हेतुत्व का सूचक है।
(A) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या है
(B) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या नहीं है
(C) A सही है, R गलत है

(D) A गलत है, R सही है

100. 'कांतासम्मित उपदेश' की त्रि-सम्मित व्यवस्था में वेद और इतिहास-पुराण क्रमशः —
(A) मित्र-सम्मित; प्रभु-सम्मित
(B) प्रभु-सम्मित; मित्र-सम्मित
(C) कांता-सम्मित; प्रभु-सम्मित
(D) मित्र-सम्मित; कांता-सम्मित

101. "कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है" — परिभाषा किसकी?
(A) प्रसाद (B) पंत (C) महादेवी (D) निराला

102. "व्यंग्यार्थ आत्मा है, शब्दार्थ शरीर" — द्वि-स्तरीय रूपक किसकी देन?
(A) मम्मट (B) आनंदवर्धन (C) कुंतक (D) भामह

103. कथन (A) : वक्रोक्ति और औचित्य स्वतंत्र दावों के बावजूद रस-ध्वनि व्यवस्था में समाहार्य माने गए।
कारण (R) : वक्रता व्यंजक-शैली का और औचित्य रस-अनुकूलता का ही विस्तारित कथन सिद्ध होता है।
(A) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या है
(B) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या नहीं है
(C) A सही है, R गलत है
(D) A गलत है, R सही है

104. रस-सूत्र में किस अवयव का उल्लेख नहीं है, जिस पर समस्त व्याख्या-विवाद टिका है?
(A) विभाव (B) अनुभाव (C) स्थायी भाव (D) व्यभिचारी

105. 'चित्र-तुरग न्याय' किस व्याख्या से संबद्ध है?
(A) उत्पत्तिवाद (B) अनुमितिवाद (शंकुक) (C) भुक्तिवाद (D) अभिव्यक्तिवाद

106. भट्ट नायक की त्रि-शक्ति व्यवस्था का सही क्रम —
(A) अभिधा → भावकत्व → भोजकत्व
(B) भावकत्व → अभिधा → भोजकत्व
(C) अभिधा → भोजकत्व → भावकत्व
(D) व्यंजना → भावकत्व → भोजकत्व

107. कथन (A) : अभिनवगुप्त की व्याख्या सर्वमान्य बनी।
कारण (R) : वह व्यंजना-व्यापार द्वारा रस को सामाजिक के निज आनंद-रूप में सिद्ध कर ध्वनि-सिद्धांत से संगति बिठाती है।
(A) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या है
(B) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या नहीं है
(C) A सही है, R गलत है
(D) A गलत है, R सही है

108. सात्त्विक अनुभावों में सम्मिलित नहीं है —
(A) स्तंभ (B) रोमांच (C) निर्वेद (D) वैवर्ण्य

109. "साधारणीकरण आलंबनत्व-धर्म का होता है" तथा "साधारणीकरण कवि की अनुभूति का होता है" — क्रमशः किनके मत?
(A) नगेन्द्र; शुक्ल (B) शुक्ल; नगेन्द्र (C) भट्ट नायक; अभिनव (D) विश्वनाथ; मम्मट

110. रस-वर्ण सुमेलन में असंगत —
(A) शृंगार — श्याम (B) हास्य — सित (C) अद्भुत — पीत (D) वीर — रक्त

111. रस-युग्म उत्पत्ति (नाट्यशास्त्र) में असंगत —
(A) हास्य ← शृंगार (B) करुण ← रौद्र (C) अद्भुत ← वीर (D) भयानक ← करुण

112. 'भक्तिरसामृतसिंधु' और 'भगवद्भक्तिरसायन' के रचयिता क्रमशः —
(A) रूप गोस्वामी; मधुसूदन सरस्वती
(B) मधुसूदन; रूप गोस्वामी
(C) जीव गोस्वामी; वल्लभ
(D) विश्वनाथ; भोज

113. करुण रस और करुण-विप्रलंभ का विभेदक —
(A) अश्रु-मात्रा
(B) पुनर्मिलन की आशा का शेष रहना (विप्रलंभ) बनाम आत्यंतिक वियोग (करुण)
(C) देवता-भेद
(D) वर्ण-भेद

114. कथन (A) : अभिनवगुप्त ने शांत को रस-शिरोमणि माना।
कारण (R) : उनके अनुसार समस्त रस अंततः चित्त-विश्रांति (शम) में पर्यवसित होते हैं।
(A) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या है
(B) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या नहीं है
(C) A सही है, R गलत है
(D) A गलत है, R सही है

115. 'रस-मीमांसा' और 'रस-सिद्धांत' — क्रमशः —
(A) नगेन्द्र; शुक्ल (B) शुक्ल; नगेन्द्र (C) गुलाबराय; द्विवेदी (D) शुक्ल; विश्वनाथ

116. नाट्यशास्त्र की चार वृत्तियों में 'भारती' का क्षेत्र —

(A) युद्ध-ओज व्यापार (B) वाक्-प्रधान व्यापार (C) शृंगार-कैशिकी (D) सात्त्विक-अभिनय

117. रावण-सीता प्रसंग की रति-प्रतीति शास्त्र में कहलाती है —

(A) रस-ध्वनि (B) रसाभास (C) भाव-शांति (D) शबलता

118. 'खंडिता' नायिका की स्थिति —

(A) पति परदेश गया है

(B) पति अन्यत्र रात्रि बिताकर प्रातः लौटा है — रोष-व्यथा

(C) संकेत-स्थल पर प्रिय नहीं आया

(D) कलह के बाद पश्चात्ताप

119. विरोधी रसों के संयोग-परिहार की मान्य युक्ति —

(A) दोनों का त्याग

(B) पृथक् आलंबन-आश्रय अथवा प्रधान-गौण (अंगी-अंग) व्यवस्था

(C) केवल वर्ण-परिवर्तन

(D) छंद-भेद

120. 'धीरोदात्त' नायक-लक्षण में अनिवार्य —

(A) उद्धत-अहंकार

(B) गंभीर-क्षमाशील महासत्त्व (आत्मश्लाघा-रहित)

(C) कला-विलास प्रवणता

(D) निश्चिंत-शांति मात्र

121. 'अवहित्था' का अर्थ —

(A) आलस्य (B) हर्ष-गोपन/भाव छिपाने की चेष्टा (C) मूर्च्छा (D) अधीरता

122. 'सिर पर बैठ्यो काग...' पंक्ति का रस —

(A) भयानक (B) बीभत्स (C) करुण (D) रौद्र

123. संचारी-सूची में 'मरण' की उपस्थिति का शास्त्र-तर्क —

(A) त्रुटि है

(B) मरण भी प्रसंग-विशेष में आगंतुक-भाव की तरह आ-जा सकता है (आसन्न-मरण दशा-चित्रण)

(C) स्थायी है

(D) अनुभाव है

124. "न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितानन्म्" — किस संप्रदाय का घोष-वाक्य है?

(A) रीति (B) अलंकार (भामह) (C) ध्वनि (D) औचित्य

125. वक्रता-षट्क का सूक्ष्म-से-स्थूल सही क्रम —

(A) वर्ण → पद-पूर्वार्ध → पद-परार्ध → वाक्य → प्रकरण → प्रबंध

(B) पद → वर्ण → वाक्य → प्रबंध → प्रकरण → रस

(C) वाक्य → वर्ण → पद → प्रकरण → प्रबंध → महावाक्य

(D) वर्ण → वाक्य → पद → प्रबंध → प्रकरण → ग्रंथ

126. ध्वनि-विरोधी आचार्यों में सम्मिलित नहीं —

(A) महिम भट्ट (B) भट्ट नायक (C) अभिनवगुप्त (D) धनंजय

127. कथन (A) : 'विभावना' और 'विशेषोक्ति' परस्पर-पूरक विरोधी अलंकार-युग्म हैं।

कारण (R) : विभावना में कारण-बिना कार्य और विशेषोक्ति में कारण-रहते कार्य का अभाव वर्णित होता है।

(A) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या है

(B) A और R दोनों सही हैं; R, A की सही व्याख्या नहीं है

(C) A सही है, R गलत है

(D) A गलत है, R सही है

128. "अनौचित्यादृते नान्यद् रसभंगस्य कारणम्" — यह औचित्य-बीज वाक्य किस ग्रंथ का है?

(A) औचित्यविचारचर्चा (B) ध्वन्यालोक (आनंदवर्धन) (C) काव्यप्रकाश (D) वक्रोक्तिजीवित

129. वैदर्भी, गौड़ी, पांचाली का गुण-सुमेलन —

(A) माधुर्य; ओज; मिश्र

(B) ओज; माधुर्य; प्रसाद

(C) प्रसाद; मिश्र; ओज

(D) माधुर्य; प्रसाद; ओज

130. 'कश्मीर-परंपरा' के आचार्यों का सही समुच्चय —

(A) भामह, दंडी, भोज

(B) आनंदवर्धन, अभिनवगुप्त, क्षेमेंद्र, मम्मट

(C) विश्वनाथ, जगन्नाथ, हेमचंद्र

(D) भरत, धनंजय, रुद्रट

131. 'सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है' — अलंकार —

(A) भ्रांतिमान (B) संदेह (C) यमक (D) अपह्नुति

132. विश्वनाथ की चित्र-काव्य विषयक स्थापना —

(A) उत्तम काव्य